

पेशेवर सामाजिक कार्य एवं स्वैच्छिक सामाजिक कार्य के बीच अंतर एवं संबंध

1. प्रस्तावना

सामाजिक कार्य एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य व्यक्तियों, समूहों और समुदायों की समस्याओं का समाधान करना तथा उनके सामाजिक, आर्थिक एवं मानसिक कल्याण को बढ़ावा देना है। सामाजिक कार्य के माध्यम से समाज में व्याप्त गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, भेदभाव और अन्य सामाजिक समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जाता है।

सामाजिक कार्य मुख्यतः दो रूपों में किया जाता है—पेशेवर सामाजिक कार्य तथा स्वैच्छिक सामाजिक कार्य। दोनों का उद्देश्य मानव सेवा और समाज का कल्याण करना है, लेकिन इनके कार्य करने के तरीके, प्रशिक्षण, पारिश्रमिक तथा उत्तरदायित्व में अंतर पाया जाता है।

2. पेशेवर सामाजिक कार्य का अर्थ

पेशेवर सामाजिक कार्य से आशय ऐसे सामाजिक कार्य से है, जिसे विशेष ज्ञान, शिक्षा, प्रशिक्षण, कौशल, व्यावसायिक मूल्यों एवं नैतिक सिद्धांतों के आधार पर किया जाता है।

पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता सामाजिक समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करके व्यक्तियों, समूहों एवं समुदायों की समस्याओं के समाधान में सहायता करता है।

परिभाषा

पेशेवर सामाजिक कार्य वह व्यवस्थित एवं उद्देश्यपूर्ण सेवा है, जिसे प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ता अपने विशेष ज्ञान, कौशल, व्यावसायिक मूल्यों और नैतिक सिद्धांतों के आधार पर समाज कल्याण के लिए प्रदान करता है।

पेशेवर सामाजिक कार्य की प्रमुख विशेषताएँ

1. विशेष शिक्षा एवं प्रशिक्षण: इसमें सामाजिक कार्य से संबंधित औपचारिक शिक्षा और प्रशिक्षण का विशेष महत्व होता है।
2. वैज्ञानिक दृष्टिकोण: सामाजिक समस्याओं को समझने एवं उनके समाधान के लिए व्यवस्थित विधियों का प्रयोग किया जाता है।
3. व्यावसायिक ज्ञान: सामाजिक कार्यकर्ता समाज, व्यक्ति, समूह एवं समुदाय के व्यवहार का ज्ञान रखता है।
4. नैतिक सिद्धांत: इसमें मानव गरिमा, सामाजिक न्याय, समानता और गोपनीयता को महत्व दिया जाता है।
5. पारिश्रमिक: पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता सामान्यतः अपने कार्य के बदले वेतन या पारिश्रमिक प्राप्त करता है।
6. उत्तरदायित्व: उसे अपने कार्य के प्रति व्यावसायिक एवं संस्थागत उत्तरदायित्व निभाना पड़ता है।
7. व्यवस्थित कार्यप्रणाली: इसमें अध्ययन, आकलन, योजना, हस्तक्षेप और मूल्यांकन जैसी प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है।

उदाहरण

अस्पताल में कार्यरत सामाजिक कार्यकर्ता।

बाल कल्याण संस्थान में कार्यरत प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ता।

परिवार परामर्श केंद्र में कार्य करने वाला सामाजिक कार्यकर्ता।

पुनर्वास केंद्र में सामाजिक कार्य सेवाएँ प्रदान करने वाला प्रशिक्षित व्यक्ति।

3. स्वैच्छिक सामाजिक कार्य का अर्थ

स्वैच्छिक सामाजिक कार्य से आशय ऐसे सामाजिक कार्य से है, जिसे व्यक्ति अपनी इच्छा, सेवा भावना, मानवीय संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व के आधार पर करता है। इसका प्रमुख उद्देश्य व्यक्तिगत लाभ के स्थान पर समाज और जरूरतमंद लोगों की सहायता करना होता है।

स्वैच्छिक सामाजिक कार्य व्यक्ति, समूह, सामाजिक संगठन, गैर-सरकारी संगठन या सामुदायिक संस्थाओं के माध्यम से किया जा सकता है।

परिभाषा

स्वैच्छिक सामाजिक कार्य वह सामाजिक सेवा है, जिसे व्यक्ति अपनी इच्छा और सेवा भावना से समाज के कल्याण के लिए करता है तथा जिसके लिए सामान्यतः नियमित आर्थिक पारिश्रमिक प्राप्त करना उसका मुख्य उद्देश्य नहीं होता है।

स्वैच्छिक सामाजिक कार्य की प्रमुख विशेषताएँ

1. स्वेच्छा पर आधारित: व्यक्ति अपनी इच्छा से सामाजिक सेवा में भाग लेता है।
2. सेवा भावना: इसका प्रमुख उद्देश्य जरूरतमंद लोगों की सहायता करना होता है।
3. पारिश्रमिक का अभाव: इसमें सामान्यतः नियमित वेतन प्राप्त करना मुख्य उद्देश्य नहीं होता, यद्यपि कुछ खर्चों की प्रतिपूर्ति या मानदेय मिल सकता है।
4. सामुदायिक सहभागिता: इसमें स्थानीय लोगों और समुदाय की सक्रिय भागीदारी होती है।
5. लचीली कार्यप्रणाली: कार्य स्थानीय आवश्यकताओं एवं उपलब्ध संसाधनों के अनुसार किया जा सकता है।
6. मानवीय संवेदना: इसमें सहानुभूति, सहयोग और परोपकार को महत्व दिया जाता है।
7. विभिन्न क्षेत्रों में कार्य: शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, आपदा राहत और जनजागरूकता जैसे क्षेत्रों में स्वैच्छिक सेवा दी जाती है।

उदाहरण

गरीब बच्चों को निःशुल्क पढ़ाना।

रक्तदान शिविर के आयोजन में सहयोग करना।

बाढ़ या अन्य आपदा से प्रभावित लोगों की सहायता करना।

स्वच्छता अभियान में भाग लेना।

वृद्धाश्रम में रहने वाले लोगों की सहायता करना।

4. पेशेवर सामाजिक कार्य एवं स्वैच्छिक सामाजिक कार्य में अंतर

दोनों के बीच प्रमुख अंतर निम्नलिखित हैं:

क्रमांक	अंतर का आधार	पेशेवर सामाजिक कार्य	स्वैच्छिक सामाजिक कार्य
---------	--------------	----------------------	-------------------------

- | | | | |
|----|------|--|--|
| 1. | अर्थ | विशेष ज्ञान एवं प्रशिक्षण के आधार पर किया जाने वाला सामाजिक कार्य। | अपनी इच्छा एवं सेवा भावना से किया जाने वाला सामाजिक कार्य। |
|----|------|--|--|

2. उद्देश्य सामाजिक समस्याओं का व्यवस्थित समाधान एवं कल्याण। समाज सेवा और जरूरतमंदों की सहायता।
 3. शिक्षा सामान्यतः सामाजिक कार्य की औपचारिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आवश्यक होता है। औपचारिक सामाजिक कार्य शिक्षा अनिवार्य नहीं होती।
 4. ज्ञान व्यावसायिक ज्ञान एवं सिद्धांतों का व्यवस्थित प्रयोग होता है। सामान्य अनुभव, सेवा भावना और उपलब्ध ज्ञान के आधार पर कार्य किया जा सकता है।
 5. पारिश्रमिक सामान्यतः वेतन या पारिश्रमिक प्राप्त होता है। सामान्यतः नियमित पारिश्रमिक मुख्य उद्देश्य नहीं होता।
 6. कार्यप्रणाली व्यवस्थित एवं उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया अपनाई जाती है। कार्यप्रणाली गतिविधि और परिस्थिति के अनुसार बदल सकती है।
 7. उत्तरदायित्व व्यावसायिक नैतिकता तथा संस्थागत नियमों के प्रति उत्तरदायी होता है। संगठन के नियमों और स्वैच्छिक भूमिका के अनुसार उत्तरदायी होता है।
 8. कार्य का क्षेत्र अस्पताल, विद्यालय, न्याय व्यवस्था, पुनर्वास केंद्र और कल्याणकारी संस्थाएँ आदि। सामुदायिक सेवा, राहत कार्य, जागरूकता अभियान और गैर-सरकारी संगठन आदि।
 9. कार्य की निरंतरता सामान्यतः निर्धारित कार्य समय और जिम्मेदारियों के अनुसार कार्य करता है। उपलब्ध समय और स्वैच्छिक प्रतिबद्धता के अनुसार कार्य करता है।
 10. समस्या समाधान आकलन, योजना, हस्तक्षेप और मूल्यांकन जैसी विधियों का प्रयोग किया जाता है। सामान्य सहायता, सहयोग और आवश्यकतानुसार अन्य लोगों या संस्थाओं से संपर्क किया जा सकता है।
 11. कौशल विशेष व्यावसायिक कौशल का प्रयोग किया जाता है। आवश्यकतानुसार सामान्य या विशेष कौशल का प्रयोग किया जाता है।
 12. उदाहरण अस्पताल में नियुक्त सामाजिक कार्यकर्ता। अस्पताल में मरीजों की सहायता करने वाला स्वयंसेवक।
- ध्यान देने योग्य बात: स्वैच्छिक सामाजिक कार्य करने वाला व्यक्ति भी प्रशिक्षित हो सकता है। इसी प्रकार, सामाजिक कार्य की औपचारिक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति स्वयंसेवक के रूप में भी सेवा कर सकता है। इसलिए दोनों के बीच अंतर मुख्यतः कार्य की प्रकृति, भूमिका, प्रशिक्षण के उपयोग और पारिश्रमिक के आधार पर समझना चाहिए।

5. पेशेवर सामाजिक कार्य एवं स्वैच्छिक सामाजिक कार्य के बीच संबंध

पेशेवर और स्वैच्छिक सामाजिक कार्य में अंतर होने के बावजूद दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। दोनों का व्यापक उद्देश्य समाज में कल्याण, समानता और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देना है।

1. समान उद्देश्य

दोनों का उद्देश्य जरूरतमंद व्यक्तियों की सहायता करना, सामाजिक समस्याओं को कम करना और लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाना है।

2. मानव सेवा की भावना

दोनों प्रकार के सामाजिक कार्यों में मानवीय गरिमा, संवेदनशीलता, सहयोग और सेवा की भावना महत्वपूर्ण होती है।

3. एक-दूसरे के पूरक

पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता विशेष ज्ञान और कौशल के आधार पर जटिल समस्याओं के समाधान में सहायता करता है, जबकि स्वयंसेवक समुदाय तक पहुँचने, जागरूकता फैलाने और सहायता गतिविधियों में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

4. समुदाय की भागीदारी

दोनों समुदाय के लोगों को सामाजिक समस्याओं की पहचान करने और उनके समाधान में भाग लेने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

5. सामाजिक समस्याओं के समाधान में सहयोग

गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण, घरेलू हिंसा, बेरोजगारी और आपदा जैसी समस्याओं के समाधान में पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता और स्वयंसेवक मिलकर काम कर सकते हैं।

6. संसाधनों का उपयोग

स्वयंसेवक समुदाय के स्थानीय संसाधनों, लोगों और संगठनों को सक्रिय करने में सहायता कर सकते हैं। पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता इन संसाधनों के नियोजन और व्यवस्थित उपयोग में योगदान दे सकता है।

7. जागरूकता एवं जनसहभागिता

दोनों सामाजिक योजनाओं, स्वास्थ्य कार्यक्रमों, शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक अधिकारों के प्रति लोगों को जागरूक कर सकते हैं।

8. सामाजिक न्याय की स्थापना

दोनों का सहयोग समाज के कमजोर एवं वंचित वर्गों तक सहायता पहुँचाने तथा उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में उपयोगी है।

9. प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन

पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता स्वयंसेवकों को उनकी भूमिका के अनुसार मार्गदर्शन और प्रशिक्षण दे सकता है। इससे सामाजिक सेवा की गुणवत्ता और प्रभावशीलता बढ़ सकती है।

10. संस्थागत विकास

गैर-सरकारी संगठनों, अस्पतालों, विद्यालयों और सामुदायिक संस्थाओं में पेशेवर कार्यकर्ता एवं स्वयंसेवक मिलकर कार्यक्रमों को सफल बनाने में योगदान दे सकते हैं।

6. पेशेवर एवं स्वैच्छिक सामाजिक कार्य का उदाहरण

मान लीजिए कि किसी गाँव में कुपोषण की समस्या है।

पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका:

कुपोषण की समस्या का व्यवस्थित अध्ययन करना।

प्रभावित परिवारों की आवश्यकताओं का आकलन करना।

आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं स्वास्थ्य विभाग के साथ समन्वय करना।

पोषण संबंधी कार्यक्रमों की योजना और मूल्यांकन में सहयोग देना।

स्वैच्छिक सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका:

ग्रामीणों को पोषण के प्रति जागरूक करना।

स्वास्थ्य एवं पोषण शिविरों के आयोजन में सहयोग देना।

जरूरतमंद परिवारों को उपलब्ध सेवाओं की जानकारी देना।

समुदाय के लोगों को कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित करना।

इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता का विशेष ज्ञान और स्वयंसेवक का सामुदायिक सहयोग मिलकर सामाजिक समस्या के समाधान को अधिक प्रभावी बना सकते हैं।

7. सामाजिक विकास में दोनों का महत्व

पेशेवर एवं स्वैच्छिक सामाजिक कार्य दोनों सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

पेशेवर सामाजिक कार्य का महत्व:

समस्याओं का व्यवस्थित आकलन एवं समाधान।

विशेष ज्ञान और कौशल का उपयोग।

सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार।

व्यावसायिक नैतिकता एवं उत्तरदायित्व का पालन।

स्वैच्छिक सामाजिक कार्य का महत्व:

समाज में सेवा भावना का विकास।

समुदाय की सक्रिय भागीदारी।

सामाजिक जागरूकता में वृद्धि।

जरूरतमंदों तक सहायता पहुँचाने में सहयोग।

सामुदायिक एकता एवं सहयोग को प्रोत्साहन।

8. निष्कर्ष

अंततः कहा जा सकता है कि पेशेवर सामाजिक कार्य और स्वैच्छिक सामाजिक कार्य दोनों समाज कल्याण के महत्वपूर्ण माध्यम हैं। पेशेवर सामाजिक कार्य विशेष शिक्षा, प्रशिक्षण, ज्ञान एवं वैज्ञानिक कार्यप्रणाली पर आधारित होता है, जबकि स्वैच्छिक सामाजिक कार्य मुख्यतः स्वेच्छा, सेवा भावना और सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित होता है।

दोनों में अंतर होने के बावजूद इनके उद्देश्य एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। पेशेवर सामाजिक कार्य की विशेषज्ञता और स्वैच्छिक सामाजिक कार्य की जनभागीदारी का समन्वय सामाजिक समस्याओं के प्रभावी समाधान तथा सामाजिक न्याय की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

इसलिए समाज के समग्र विकास के लिए पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ताओं और स्वयंसेवकों के बीच सहयोग एवं समन्वय आवश्यक है।